अध्याय 14

समास

'दू भा दू से अधिक शब्द भा पद जब आपन-आपन विभक्ति छोड़ के एक दूसरा से मिल जाला स तब ओहनी के मिलला से जे विकार पैदा होला ओंह बिकारी शब्द के समास कहल जाला'। जइसे-'खरपतवार', 'प्रतिदिन', 'राजपुरूख', 'शोकाकुल', 'बेआकुल', 'तिरमुहानी', 'बेलुरी', 'बेसरम'। ऊपर लिखल उदाहरण में 'खर' आ 'पतवार', 'प्रति' आ 'दिन', 'राजा' आ 'पुरूख', शोक' आ 'आकुल', 'वे' आ आकुल', 'तीन' आ 'मुहानी', 'बे' आ 'लुर', 'बे' आ 'सरम' आपन-आपन विभक्ति छोड़ के मिलल बाड़े स। एह तरह से समास के विशेषता बा-

1. समास में कम से कम दू शब्द के मेल होला,
2. शब्दन के मेल से जे बिकारी पद बनेला ओकरा के सामासिक पद कहल जाला।
3. मेल के बाद शब्द आपन-आपन आउर अलग-अलग अर्थ छोड़ के कवनो दोसर अर्थ के बोध करावे लागेले सन।
4. समास में आइल शब्दन के विभक्ति के लोप हो जाला।
5. सामासिक पद के थोड़े भाव अलग-अलग करे भा विश्लेषित करे के क्रिया के समास-बिग्रह कहल जाला।

समास के रूप

समास में दू भा दू से अधिक शब्द भा पद मिलेलेसन, जवना में कवनो दुइये गो पद प्रमुख होले स। ओहनी में कबहूँ पहिलका पद प्रमुख हो जाला, कबहूँ दूसरका पद, कबहूँ दूनों पद प्रमुख हो जाले स त कबहूँ अइसनो होला कि दूनों पद गौण हो जाले स आऊर ओहनी के जगह पर कवनो तीसर पद प्रधान हो जाला। पद प्रमुखता के ई चार स्थिति के अनुसार समास के रूप निर्धारित होला। एह तरीका से समास के मुख्य रूप से चार गो भेद होला।

1. अव्ययीभाव समास, 2. तत्पुरुष समास, 3. द्वन्द्व समास, आ 4. बहुब्रीही समास।

अव्यीभाव समास

जवना सामासिक पद के पहिलका पद प्रधान होला आउर ऊ शब्द उपसर्ग जाति के कवनो अव्यय होला ओकरा के अव्ययीभाव समास कहल जाला। एकर विशेषता बा-

1. अव्यीभाव समास के पहिला पद प्रधान होला, 2. पहिला पद कवनो उपसर्ग जाति के अव्यय होला, 3. पहिला पद के सामान्यतः कवनो अर्थ ना होला बाकिर ऊ दूसरका शब्द के साथ लग के एगो खास अर्थ देबे लागेला, 4. आम तौर पर पूरा पद क्रिया विशेषण बन जाला। जइसे-प्रतिदिन, यथाशक्ति, आजन्म, आमरण में प्रति, यथा, आ, शब्द उपसर्ग जाति के अव्यय बाड़े स। एहनी के कवनो खास अर्थ नइखे बाकिर इ सब क्रम से 'दिन', 'शक्ति', 'जन्म', आउर 'मरण' से लग के खास अर्थ 'रोज-रोज', 'शक्तिभर', 'जन्म भर', 'मरण' तक के बोध करावत बाड़े स।

तत्पुरुष समास

जवना सामासिक पद के दूसरा भा अंतिम पद प्रधान होखे ओकरा के तत्पुरुष समास कहल जाला। एकर विशेषता बा-

1. तत्पुरुष समास में दूसरा पद प्रधान होला।

2. पहिला पद समान्यतः विशेषण आ दूसरा पद विशेष्य होला भा बन जाला।

3. दूनों पद के बीच जे कारक विभक्ति होला ओकर लोप हो जाला।

कारकीय (कर्त्ता आउर संबोधन छोड़ के) **विभक्ति के अस्तित्व के कारण एकर एगो नाम कारकीय समास भी हवे। कारकीय चिह्न के अनुसार भी एकर छव गो भेद कइल गइल बा।**

परिभाषा आ उदाहरण समेत ऊ भेद बाड़े स-

1. कर्म तत्पुरुष भा तत्पुरुष द्वितीया-जवना तत्पुरुष समास के **पहिलका पद कर्म कारक के विभक्ति 'के' भा 'को' से युक्त होला ओकरा के कर्म** तत्पपुरुष भा तत्पुरुष द्वितीय कहल जाला। जइसे-स्वर्गप्राप्त (स्वर्ग के प्राप्त), शरणागत (शरण के खातिर आइल)

2. करण तत्पुरुष भा तत्पुरुष द्वितीय- जवना तत्पुरुष समास के पहिलका पद करण कारक के विभक्ति 'से' से युक्त होला, ओकरा के करण तत्पुरुष भा तत्पुरुष तृतीया कहल जाला। जइसे- शोकाकुल (शोक से बेआकुल), अकालपीड़ित (अकाल से पीड़ित)।

3. संप्रदान तत्पुरुष भा चतुर्थी–जवना तत्पुरुष समास के पहिला पद संप्रदान कारक के विभक्ति के, के खातिर, 'खातिर' से युक्त होला ओकरा के संप्रदान तत्पुरुष भा तत्पुरुष चतुर्थी कहल जाला। जैसे–राहखंर्चा (राह खातिर खर्चा), देशभगति (देश के खातिर भगति) -

4. अपादान तत्पुरुष भा तत्पुरुष पंचमी–जवना तत्पुरुष समास के पहिलका पद अपादान भा पंचमी कारक विभक्ति से युक्त होला ओकरा के अपादान तत्पुरुष भा तत्पुरुष पंचमी कहल जाला। जइसे–'करमहीन', (करम से हीन), 'करमजरू' (करम से जरल), 'धनहीन' (धन से हीन), 'रिनमुक्त' (रिन से मुक्त), 'देशनिकाला' (देश से निकाला)।

5. संबंध तत्पुरुष भा तत्पुरुष षष्ठी–जवना तत्पुरुष समास के पहिला पद संबंध तत्पुरुष भा तत्पुरुष पंचमी कारक विभक्ति 'का', 'के', 'की' से युक्त होला ओकरा के संबंध तत्पुरुष भा तत्पुरुष पंचमी कहल जाला। जइसे- गंगाजल' (गंगा के जल), 'घोड़दऊर' (घोड़ा के दौड़), 'इस्त्रीधन' (इस्त्री के धन)।

6. अधिकरण तत्पुरुष भा तत्पुरुष सप्तमी समास–जवना समास के पहिला पद अधिकरण कारक विभक्ति 'में', 'पर' से युक्त होला ओकरा के अधिकरण तत्पुरुष भा तत्पुरुष षष्ठी समास कहल जाला। जैसे–'तेलपक' (तेल में पकावल), 'खटपरू' (खटिया पर परल)।

एकरा अलावे भी तत्पुरुष समास के कर्मधारय, नञ, द्विगु कर्मधारय मध्यमपदलोपी, उपपद, अलुक, मयूरव्यंसकादि अनेक भेद होला। एमे महत्वपूर्ण बा–

कर्मधारय-कर्मधारय समास ऊ तत्पुरुष समास ह जवना में कम से कम एक पद विशेषण होला आऊर दूनों पद के बीच विशेषण-विशेष्य के संबंध होला। जइसे-'करमसाढ़' (साँढ़ लेखा करम), 'भलमानुख' (भलामानुख), 'पीताम्बर' (पीत अंबर-पीला वस्त्र), 'शीतोष्ण' (शीत-उष्ण), 'कुमारी' (क्वारी लड़की)।

नञ् समास-ऊ तत्पुरूष समास जवना के प्रथम पद नकार सूचक होला ओकरा के नञ् समास कहल जाला। जइसे-अनपढ़ (बे पढ़ल लिखल), अनगिनत (गिनल ना कइल जा सके)।

द्विगु समास-ऊ तत्पुरुष समास जवना के प्रथम पद संख्यासूचक विशेषण होला ओकरा के द्विगु समास कहल जाला। जइसे-'नवरतन' (नव गो रतन), 'चउकोर' (चार कोर वाला), 'चौराहा' (चार राह के समूह), 'त्रिभुज' (तीन भुजा वाला)।

द्वंद्व समास

ऊ समास जवना के दूनो पद प्रधान होला ओकरा के द्वंद्व समास कहल जाला। जइसे-'माईबाप' (माई अउर बाबूजी), 'सीताराम' (सीता अउरी राम), 'पाप-पुन' (पाप आ पुन), दयाधरम' (दया अउरी धरम)

बहुब्रीहि समास

ऊ समास जवना के ना त पहिला पद प्रधान होला ना दूसरा आ दूनों मिल के कवनों तीसर अर्थ देबे लागेले स तब ओकरा के बहुब्रीहि समास कहल जाला। जइसे-'लरकोरी' (लइका बा जेकरा कोरा में),

'पीताम्बर' (पीला बा वस्त्र ऊ अर्थात् कृष्ण), 'वीणापाणि' (वीणा बा जेकरा हाथ में ऊ अर्थात् सरस्वती)।

बोध प्रश्न

1. खाली जगह के सही विकल्प से भरीं।

(सामासिक पद, समास-विग्रह, अव्यीभाव समास, द्वंद्व समास, बहुब्रीहि समास)

(क) शब्दन के मेल से जे बिकारी पद बनेला ओकरा के ...... कहल जाला।

(ख) सामासिक पद के तूड़े भा अलग-अलग करे भा विश्लेषित करे के क्रिया के .... कहल जाला।

(ग) जवना सामासिक पद के पहिलका पद प्रधान होला आउर ऊ शब्द उपसर्ग जाति के कवनो अव्यय होला त ओकरा के .... कहल जाला।

(घ) ऊ समास जवना के दूनों पद प्रधान होला ओकरा के .... कहल जाला।

(ङ) समास जब मूल अर्थ छोड़ के कवनो तीसर अर्थ देबे लागे तब ओकरा के .... कहल जाला।

2. सुमेलित कइल जाए

	अ	ब
(क)	अपादान तत्पुरुष भा तत्पुरुष पंचमी	लरकोरी (लइका बा जेकरा कोरा में)
(ख)	संबंध तत्पुरुष भा तत्पुरुष पंचमी	करमसाढ़ (साँढ़ लेखा करम)

(ग) अधिकरण तत्पुरुष भा तत्पुरुष षष्ठी समास	'चउकोर' (चार कोर वाला)
(घ) कर्मधारय	'घोड़दऊर' (घोड़ा के दौड़)
(ङ) नञ् समास	दयाधरम (दया अउरी धरम)
(च) द्विगु समास	खटपरू (खटिया पर परल)
(छ) द्वंद्व समास	अनपढ़ (बे पढ़ल लिखल)
(ज) बहुब्रीह समास	'करमजरू' (करम से जरल)

3. नपल-तुलल शब्द में उत्तर दीं।

(क) समास केकरा के कहल जाला।

(ख) संधि समास में का अंतर बा।

(ग) समास के कैगो आ कवन-कवन रूप बा। उदाहरण दीं।

(घ) समास के का काम ह।

(ङ) कर्मधारय समास आ द्विगु समास में का अंतर बा। उदाहरण दीं।

(च) कर्मधारय समास आ बहुब्रीहि समास में का अंतर बा। उदाहरण समेत समुझाईं।

(छ) नीचे लिखल शब्दन के बिग्रह करीं -करमजरू, करमकूट, खटपरू, खड़ेसरी, स्वर्गवासी, लरकोरी, बरजोरी।

क्रियाभ्यास

(1) समास के प्रचलित अप्रचलित रूप भेदन के संग्रह क के एगो आरेख खींचीं।